मैं ढूँढ रहा हूँ

आर्थर बिनार्ड

छायाचित्र
तादाशि ओकाकुरा

जापानी से अनुवाद
तोमोको किकुचि

एकलव्य

मैं ढूँढ रहा हूँ

आर्थर बिनार्ड

छायाचित्रः तादाशि ओकाकुरा

जापानी से अनुवादः तोमोको किकुचि

एकलव्य

भूले नहीं हम...

दूसरे विश्व युद्ध के समय हिरोशिमा और नागासाकी पर अमरीकी सेना द्वारा परमाणु बम गिराए जाने की घटना को 6 और 9 अगस्त, 2016 को 71 साल पूरे हो गए हैं। पर हिरोशिमा और नागासाकी के बाशिन्दों का दर्द अब भी ज़ारी है।

यह दर्द हमें याद दिलाता है कि विज्ञान के क्षेत्र में होने वाली खोजों के साथ अगर हम एहतियात न बरतें, तो वे किस तरह की तबाही मचा सकती हैं। इस दर्द के तार भोपाल गैस काण्ड से भी जुड़ते हैं। वैज्ञानिक प्रगति और हरित क्रान्ति की लहर पर सवार होकर रासायनिक कीटनाशक बनाने वाली कम्पनी यूनियन कार्बाइड ने भयानक कहर बरपाया था हमारे अपने भोपाल में।

इसीलिए यह किताब है, ताकि भूलें नहीं हम...

ताकि दुनिया में फिर कोई हिरोशिमा न हो, कोई भोपाल न हो।

एकलव्य
अगस्त 2016

"गुड मॉर्निंग
गुड मॉर्निंग"

आपके लिए 'अभी' कितने बजे हैं?
मेरा तो 'अभी' अब हमेशा के लिए सुबह का
8 बजकर 15 मिनट होकर रह गया है

पहले मेरी
बड़ी और छोटी सूई
"गुड मॉर्निंग" के बाद टिकटिक करती हुई
"गुड आफ्टरनून" और "गुड ईवनिंग" के बाद
"गुड नाइट" की ओर बढ़ती थी
मैं हिरोशिमा में एक नाई की बेहद व्यस्त
दुकान की दीवार पर टँगी
सभी को समय बताया करती थी
पर 6 अगस्त की सुबह 8 बजकर 15 मिनट पर
एक भयानक चकाचौंध हुई

तेज़ लपटों ने मेरे चेहरे के '1' पर
'2' पर, '3' पर, '8' और
'9' पर ज़ोर का वार किया
और मेरा 'अभी' वहीं ठिठक गया
हमेशा के लिए

मैं अब "गुड मॉर्निंग" के बाद
के "गुड आफ्टरनून" को ढूँढ रही हूँ।

10
11
12
1
2
9
3
7
6
5
4

"खाने को मेरी नमस्ते!"

कहते हुए रेइको को
मेरा ढक्कन खोलना था
फिर चावल और दाल खाना था

बारह साल की रेइको को मजबूरन
हर रोज़ हिरोशिमा की इमारतों को
ढहाने का काम करना पड़ता था
6 अगस्त की सुबह भी वह रोज़ की तरह काम पर गई
कि एक तेज़ रोशनी ने उसे चौंधा दिया

मैंने बहुत कोशिश की
कि उसके खाने को बचा पाऊँ
पर तेज़ आँच के साथ विकिरण
मुझे चीरते हुए भीतर आ गई
खाना अब खाने लायक नहीं बचा था
इसे मत खाओ।

मैं फिर भी उसे ढूँढ रही हूँ
वही नमस्ते सुनना चाहती हूँ
जो रेइको कह नहीं पाई।

"सू... हा...
सू... हा..."

सेत्सुको ने साँस ली, सू...
और फिर छोड़ी, हा...
वह एकदम सलामत थी
मैं सेत्सुको से चिपकी रहती थी
इसलिए मैं भी उसकी साँस के साथ हिलती थी
सू... हा...

6 अगस्त की सुबह भी सेत्सुको ने मुझे पहना
और रोज़ की तरह हिरोशिमा के दफ्तर में
मेज़ के पास बैठ गई
एक चकाचौंध हुई
दीवार छतें सब गिर गईं
सेत्सुको उसी पल भागी
उसे लगा, "मैं बच गई।"

पर विकिरण का असर
धीरे-धीरे शरीर को खोखला बना देता है
धीरे-धीरे, दिन ब दिन
सेत्सुको की साँस बदल गई
हाँफ... हाँफ... हाँफ... हाँफ...,
फफोलों में दर्द है, चेहरा गरम है
बाल झड़ते हैं, नाक से खून निकलता रहता है,
उसकी साँस थम गई।

मैं नहीं भूलूँगी, उसकी साँस
सू... हा... सू... हा...

"च... चर... चर-चर"

मेरे अन्दर पानी है
वह धीरे-धीरे गरम हो रहा था
माँ किकुमि ने मुझमें
पानी डालकर आँच पर चढ़ाया
मेरे गरम पानी से चाय बनाती थी वह
आग से मुझे कोई डर नहीं
लकड़ी की हो, कोयले की या जो भी हो

परन्तु 6 अगस्त की सुबह
भयानक चमक हुई
उस आग को मैं नहीं जानती थी
असल में वह आग थी ही नहीं
वह तो यूरेनियम के विखण्डन से बनी ज़बरदस्त ऊष्मा थी
जिसने मुझ पर बार-बार ज़ोर का वार किया

अगर पानी उस ऊष्मा से गरम किया जाए तो
वह बिलकुल पीने लायक नहीं रहेगा
चर..., चर-चर
मेरी यह आवाज़ जिस आग के साथ निकलती थी
मैं ढूँढ रही हूँ उस सच्ची आग को।

"आपसे मिलकर खुशी हुई"

जब भी तामोत्सु चाचा किसी से पहली बार मिलते
तो हमेशा कहते —
आपसे मिलकर खुशी हुई

मैं तामोत्सु चाचा की नाक पर
तितली की तरह
चिपककर बैठता
उनके साथ अखबार पढ़ता
हिरोशिमा में कई लोगों से मिलता

6 अगस्त की सुबह हम दफ्तर गए
अचानक तेज़ चमक हुई
वह यूरेनियम बम था
जिसका विश्व में पहली बार प्रयोग हुआ था
चाचा की नाक गायब हो गई
जहाँ मैं हमेशा बैठता था

यूरेनियम के विखण्डन की प्रक्रिया को
कैसे रोक सकते हैं...
मैं उस तरीके को ढूँढ रहा हूँ
पर दिखाई नहीं दे रहा है।

"सीक्रेट-सीक्रेट"

मुझे सीक्रेट से प्यार है
मैं सादाको की सीक्रेटों के इन्तज़ार में हूँ
जिन्हें वह मुझसे साझा करने वाली थी
हिरोशिमा के स्कूल में आने से पहले
अपनी एक सहेली से उसने मुझे पाया था
वह मुझ में सारी बातें लिखने वाली थी
जिन्हें उसे किसी को भी नहीं बताना था
पर तभी 6 अगस्त आ गई

उस सुबह जो तेज़ चमक हुई थी
वह अमरीकी सेना की सबसे बड़ी सीक्रेट थी
जो अमरीका के लोगों से भी छिपाकर रखी गई थी
किसी को उसकी खबर न थी

उस सीक्रेट ने
सादाको की जान ले ली
मैं सबको उस सीक्रेट के बारे में
कैसे बताऊँ?
मैं इसका जवाब ढूँढ रही हूँ।

"खट से खोला,
खट से बन्द किया,
खट खट खट खट"

ये ही हमारा रोज़ का काम था

जापानी सैनिक हमें उठाते
और ताले में घुसाकर खट से घुमा देते
एक भारी भरकम दरवाज़ा खुलता
और अमरीकी सैनिक को एक सँकरे कमरे में धकेलकर
खट से... दरवाज़े पर फिर ताला जड़ दिया जाता
अमरीकी सैनिक कैद थे
जापानी सैनिक उन्हें कैद कर निगरानी में रखते थे।

6 अगस्त की सुबह एक अमरीकी हवाई जहाज़ ने
हिरोशिमा पर यूरेनियम बम गिराया
तेज़ भड़की आग में
अमरीकी जो कैद थे और
जापानी जिन्होंने उन्हें कैद किया था
सभी सैनिक मारे गए

लोगों को क्यों कैद किया जाता है?
यूरेनियम को कैद किया जाना चाहिए...
अब हम नए काम की तलाश में हैं।

"मैं आता हूँ"

कहते हुए
हर रोज़ तोशियुकि गेट पर हमें पहनता था
और काम पर निकलता था
उससे हिरोशिमा की इमारतों को
ढहाने का काम करवाया जा रहा था
उसे बहुत दूर जाना था
वह सदा हमारे साथ चलता था

6 अगस्त की सुबह रोज़ की तरह उसने काम शुरू किया
तभी भयानक चमक हुई
हमने तोशियुकि के पाँवों को बचाने की कोशिश की
पर उसके चेहरे, हाथ और बाँह पर
गर्मी चुभने लगी
पूरे शरीर में जलन...
फिर भी तोशियुकि उठकर चलने लगा
नदी किनारे धीरे-धीरे चलता रहा
गिरते-चलते घर पहुँचा और उसने कहा, "मैं आ गया।"

उस दिन से आज तक हम इन्तज़ार में हैं कि
कब वह कहेगा, "मैं आता हूँ।"
हम इन्तज़ार में हैं।

"ज़ोर-ज़ोर से"

हम ज़ोर से दाँत कब पीसते हैं?
जब पछताते हैं?
जब गरम पानी से नहाते हैं?
या जब भारी सामान उठाते हैं?

पिता मासातारो के दाँत खराब हो गए
और दाँत के डॉक्टर ने उनके लिए हमें बनाया
उस दिन से आज तक
जब भी वे भारी सामान उठाते थे
जब भी वे गरम पानी से नहाते थे
और जब भी पछताते थे
हम भी उनके साथ दाँत पीसते थे

6 अगस्त की सुबह मासातारो
हिरोशिमा के दफ्तर में मेज़ के पास बैठ गए
तभी चकाचौंध आई
भारी, गरम, पछताना
सब एक साथ
धड़ाम से गिर गए
और
उनका मुँह पूरा गायब हो गया

हम उसे ढूँढ रहे हैं।

"जल्दी भागना है!"

अगर कभी बहुत जल्दी भागना हो,
तो आप क्या लेकर भागेंगे?

मारिको बहुत सावधान रहती थी
इसलिए उसके पास हमेशा मैं थी
'अगर' वाले समय के लिए
भुनी हुई दाल, थोड़ी-सी दवाई,
छोटे भाई के लिए डायपर का कपड़ा आदि
सब मेरे अन्दर रखे थे

6 अगस्त की सुबह भी रोज़ की तरह
मारिको मुझे कन्धे पर लटकाकर बाहर निकली
और जब हिरोशिमा के आकाश को
तेज़ चमक ने चीर दिया
तब वह भाग नहीं पाई

दाल, दवाई, कपड़ा
कुछ काम के नहीं रहे
अगर
हमें यूरेनियम से बचना है
तो उसका विस्फोट रोकना होगा

मैं उस 'अगर' को ढूँढ रही हूँ।

"चलो खेलें,
चलो खेलें?"

तोशिहिको अपने दोस्तों के साथ
हमें लुढ़काकर खेलता था
पर 1945 में तोशिहिको को हर रोज़ कारखाने में
काम करने जाना पड़ता था
खेलने के लिए उसके पास बिलकुल वक्त नहीं था

6 अगस्त की सुबह
वह काम पर जाने के लिए
रेलगाड़ी का इन्तज़ार कर रहा था
कि तेज़ चमक ने उसे चौंधा दिया
तोशिहिको तुरन्त लेट गया पर
तब तक वह पूरा जल चुका था
हम तो घर पर ही थे फिर भी पिघल गए
अब कंचों की तरह हम गोल कहाँ रह सके

उससे किसलिए काम करवाया जा रहा था?
चलो खेलें
चलो खेलें
अब हम क्या खेलेंगे?
हम जवाब ढूँढ रहे हैं।

"पढ़ाई करो,
पढ़ाई करो"

बड़े लोग सब ऐसा कहते थे

मैं तात्सुया के सिर पर था
और उसके साथ स्कूल जाता था

6 अगस्त की सुबह
कक्षा शुरू होने से पहले स्कूल के मैदान में
वह अपने दोस्तों के साथ बात कर रहा था
कि तभी भयंकर चमक हुई
मैंने तात्सुया के सिर को ढककर
उसे बचाने की बहुत कोशिश की
परन्तु सिर्फ सिर बचाने से
वह नहीं बच सका

तात्सुया को किसकी पढ़ाई करनी चाहिए थी
जिससे वह अपना जीवन बचा सकता था?
मैं उस पढ़ाई को ढूँढ रहा हूँ।

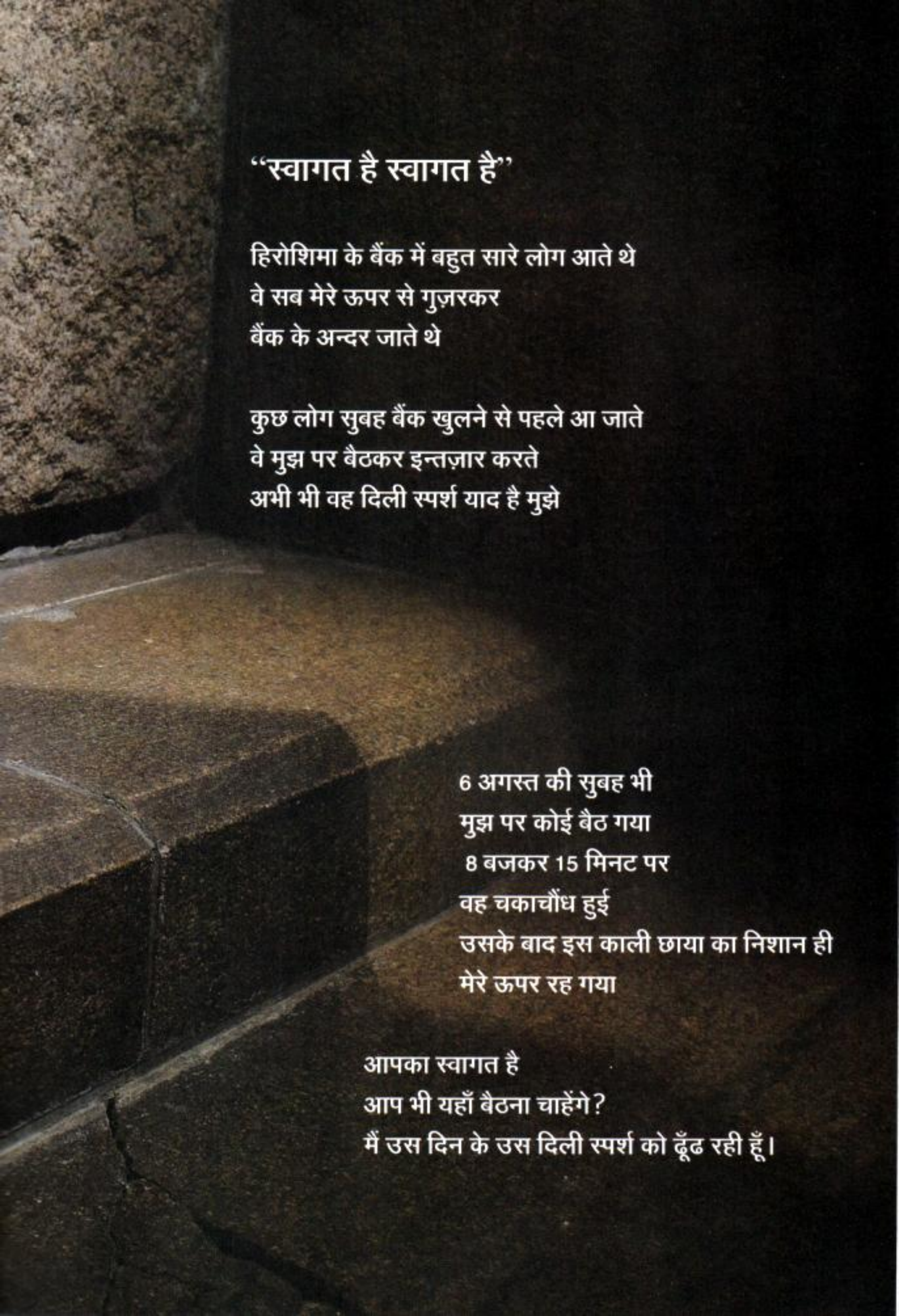

"स्वागत है स्वागत है"

हिरोशिमा के बैंक में बहुत सारे लोग आते थे
वे सब मेरे ऊपर से गुज़रकर
बैंक के अन्दर जाते थे

कुछ लोग सुबह बैंक खुलने से पहले आ जाते
वे मुझ पर बैठकर इन्तज़ार करते
अभी भी वह दिली स्पर्श याद है मुझे

6 अगस्त की सुबह भी
मुझ पर कोई बैठ गया
8 बजकर 15 मिनट पर
वह चकाचौंध हुई
उसके बाद इस काली छाया का निशान ही
मेरे ऊपर रह गया

आपका स्वागत है
आप भी यहाँ बैठना चाहेंगे?
मैं उस दिन के उस दिली स्पर्श को ढूँढ रही हूँ।

"नाकाजिमा होंमाचि" हिरोशिमा का सबसे लोकप्रिय बाज़ार था। यह घड़ी इस बाज़ार में एक नाई की दुकान की दीवार पर टँगी हुई थी और सब लोगों को समय बताया करती थी। जिरो हामाई इस दुकान के मालिक थे और बाल काटने में माहिर थे। उनकी पत्नी इतोयो का जन्म हवाई में हुआ था और वे फैशन में बहुत सक्रिय थीं। उनके घर और दुकान वाली इमारत परमाणु बम विस्फोट की जगह से 200 मीटर दूर थी। 6 अगस्त की सुबह जिरो, इतोयो, बेटी हिरोको और बेटा तामासो घर में थे। सबसे छोटा बेटा तोकुसो "मियाउचिमुरा" गाँव में था। बाद में उनके रिश्तेदार को क्षतिग्रस्त घर में यह घड़ी मिली। तब से तोकुसो ने यह घड़ी अपने पास सुरक्षित रखी थी।

(यह घड़ी तोकुसो हामाई द्वारा दान की गई है।)

सोऊचि असानो का घर एहिमे ज़िले के ओमिशिमा टापू का मन्दिर था। 12 साल की उम्र में वह हिरोशिमा के "सोतोकु चूगक्को" माध्यमिक विद्यालय में दाखिल हो गया। परन्तु उस समय स्कूल में पढ़ाई नहीं हो रही थी। हिरोशिमा के हच्योबोरि इलाके में उससे जबरन काम करवाया जा रहा था। 6 अगस्त की सुबह भी वह इन दस्तानों को पहनकर काम कर रहा था, विस्फोट स्थल से 800 मीटर की दूरी पर। सोऊचि के शरीर में काफी जलन हुई। उस रात उसने तय किया कि वह सोएगा नहीं। सारी रात वह एक पुल के पास बैठकर नींद से लड़ते हुए जागता रहा। उसे पता था कि अगर वह सो गया तो लोग लाश मानकर उसे उठा ले जाएँगे। अगले दिन 7 तारीख की रात को वह किसी रिश्तेदार के घर पहुँचा और अन्तिम साँस लेकर हमेशा के लिए सो गया।

(ये दस्ताने जूंइ आसानो द्वारा दान किए गए हैं।)

इस किताब के कहानीकारों का परिचय

(सभी वस्तुएँ हिरोशिमा शान्ति स्मारक संग्रहालय में सुरक्षित हैं)

इस डिब्बे की तली पर बहुत छोटे अक्षरों में "वातानाबे" लिखा हुआ है। हिरोशिमा के "इचिरित्सु दाइइचि कोतोजोगक्को" माध्यमिक विद्यालय में रेइको वातानाबे ने दाखिला लिया। वह हर सुबह इसी डिब्बे में टिफिन लेकर स्कूल जाती थी। असल में वह स्कूल में ज़्यादा नहीं जा पाई, क्योंकि उसे इमारत ढहाने का काम करना पड़ता था। 6 अगस्त की सुबह भी वह उसी जगह पर काम कर रही थी जो विस्फोट स्थल से 550 मीटर की दूरी पर थी। रेइको की लाश कहीं नहीं मिली। लेकिन 7 अगस्त को उसकी बड़ी बहन को एल्युमिनियम का यह डिब्बा मिला जिसमें कोयला बन चुके चावल और दाल थे। उसकी इस बहन ने ही इस डिब्बे पर सूई से उसका नाम लिखा था।

(यह डिब्बा सिगेरु वातानाबे द्वारा दान किया गया है।)

23 साल की सेत्सुको फुजिसावा को बहुत अच्छी सिलाई आती थी। उसने कपड़े को बैंगनी रंग में रँगकर खुद यह फ्रॉक सिली। 6 अगस्त की सुबह वह इसी फ्रॉक को पहनकर दफ्तर गई, जो विस्फोट स्थल से 750 मीटर की दूरी पर था। बम के कारण दफ्तर की इमारत ढह गई। सेत्सुको इमारत के नीचे से किसी तरह बाहर निकली। उसे न तो चोट लगी और न ही कोई जलन हुई। उसने अपने रिश्तेदार के घर में शरण ली। बाद में उसे बहुत तेज़ बुखार आया, उसके होंठ सूज गए, उसके सुन्दर बाल पूरे झड़ गए और नाक से खून बहता रहा। सेत्सुको ने जीने के लिए बहुत संघर्ष किया पर 18 अगस्त को उसकी मौत हो गई।

(यह फ्रॉक तोशिको फुजिसावा द्वारा दान की गई है।)

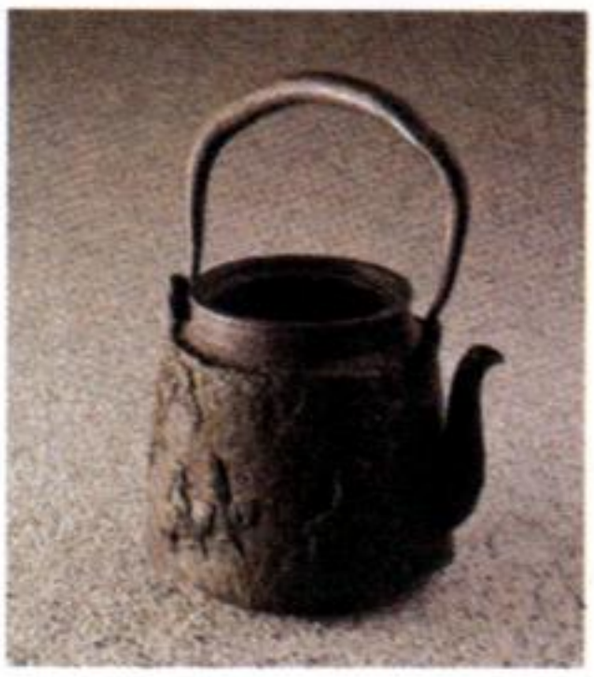

6 अगस्त की सुबह 8 बजकर 15 मिनट पर किकुमि योकोतानि अपने 11 महीने के बेटे के साथ नाश्ता करने वाली थीं। उनका घर "सकंचो" में था - विस्फोट स्थल से 600 मीटर दूर। यह आज के "तोकाइचिमचि" में पड़ता है। उनका 4 साल का बेटा नाना के यहाँ था और पति युद्धस्थल पर। किकुमि के पिता 7 अगस्त को बेटी की तलाश में हिरोशिमा आए। उन्होंने बेटी की लाश को ढूँढ निकाला जो पूरी तरह कोयला हो चुकी थी। नाती की लाश उसी कोयला बनी बेटी की गोद में मिली। उस वक्त किकुमि ने अपने बच्चे को बचाने की कोशिश में उसे भींच लिया होगा। उन दो लाशों के पास यह लोहे की केतली पड़ी मिली।

(यह केतली कुरातारो ओरिता द्वारा दान की गई है।)

तामोत्सु हिरागाकि हिरोशिमा शहर में थैलों की दुकान चलाते थे। 6 अगस्त की सुबह वे दुकान नहीं गए। उन्हें थैला व्यापार की बैठक में जाना था। बैठक की जगह विस्फोट स्थल से 500 मीटर दूर थी। उस दिन उनकी पत्नी आयानो अपने गाँव "कामोगुन" में थीं। 7 अगस्त को पति की तलाश में वह हिरोशिमा आईं और कई दिनों तक पति को ढूँढने की कोशिश करती रहीं। आखिरकार 25 अगस्त को उन्हें यह चश्मा मिला और तब तामोत्सु की मौत की बात पक्की हुई। बड़ा बेटा दाइसाकु भी "मोतोमाचि" में परमाणु बम से आहत हुआ। बाद में उसके सारे बाल झड़ गए और 21 अगस्त को उसकी मौत हो गई।

(यह चश्मा आयानो हिरागाकि द्वारा दान किया गया है।)

सादाको काताओका अभी-अभी 15 साल की हुई थी उसने हिरोशिमा के "दाइनि कोउतोउजोगाक्को" माध्यमिक विद्यालय में दाखिला लिया। वह सहपाठियों से दोस्ती नहीं कर पाई, क्योंकि स्कूल में कोई पढ़ाई नहीं हो रही थी। उसे "मिनामिकु मिनामिमाचि" में राशन के काम पर जाना पड़ता था। सादाको ने सुदूर यासुमुस गाँव में आसरा लिया था। वहाँ से कई रेलगाड़ियाँ बदलकर रोज़ स्कूल आती थी। 6 अगस्त की सुबह 8 बजकर 15 मिनट पर स्कूल जाते हुए जब वह "तोकामाचि" इलाके में पहुँची, तभी परमाणु बम गिरा। बाद में उसके पिता बेटी की तलाश में हिरोशिमा आए। वे निनोशिमा टापू तक उसे ढूँढने गए, जहाँ सारे घायलों को लाया जाता था। काफी समय बाद एक दोस्त से उनको खबर मिली कि उसने सादाको की लाश को विस्फोट स्थल से 700 मीटर की दूरी पर देखा था।

(यह कॉपी हिदेको काताओका द्वारा दान की गई है।)

जापानी सेना के हिरोशिमा सैन्य पुलिस का मुख्यालय "मोतोमाचि" में था। वहाँ लगभग 10 अमरीकी सैनिक कैद थे। वे बमवर्षक से हिरोशिमा आए थे और उनके जहाज़ को गोली मारी गई थी। पैराशूट के सहारे ज़मीन पर उतरते ही वे पकड़े गए और जेल में बन्द कर दिए गए। उन अमरीकी कैदियों की ज़िम्मेदारी लेफ्टिनेंट कर्नल शिगेओ नाकामुरा पर थी। वे 6 अगस्त की सुबह विस्फोट स्थल से 500 मीटर दूर मुख्यालय में थे। सैन्य पुलिस और कैदी विकिरण और बेहद गरम हवा के झटके का बराबर शिकार बने। 9 अगस्त को नाकामुरा का परिवार उन्हें ढूँढने हिरोशिमा आया। जल चुके मुख्यालय में उन्हें उनकी अस्थियाँ मिलीं। पास ही उनकी ये चाबियाँ भी पड़ी थीं।

(ये चाबियाँ अकिओ नाकामुरा द्वारा दान की गई हैं।)

14 साल का तोशियुकि योकोता बहुत मेहनती लड़का था। वह रोज़ सुबह चमड़े के ये मज़बूत जूते पहनकर कई किलोमीटर पैदल चलकर हिरोशिमा के केन्द्र तक जाता था। उसे वहाँ इमारत ढहाने का काम करना पड़ता था। 6 अगस्त की सुबह वह विस्फोट स्थल से 800 मीटर दूर "हच्योबोरि" में था। उसे बहुत ज़्यादा जलन हो रही थी, फिर भी उसने अपने घर वापस जाने का फैसला किया। नदी किनारे चलते-चलते कुछ आगे जाकर उसने रेलगाड़ी पकड़ ली और घर वापस पहुँचने का चमत्कार कर दिखाया। पूरा शरीर सूज जाने के कारण उसके जूते उतारना बहुत मुश्किल था। 9 अगस्त तक तोशियुकि ने अपनी जान सम्हाली और फिर हमेशा के लिए सो गया।

(ये जूते यसुको योकोता द्वारा दान किए गए हैं।)

मासातारो ओकाहारा हिरोशिमा में दन्त चिकित्सक संस्थान में काम करते थे। उन्होंने "असमिनामि" इलाके के "गिओन" में अपना घर बनाया। उनकी चार बेटियाँ थीं और घर हमेशा खुशियों से भरा रहता था। मासातारो बहुत मितभाषी थे और कभी-कभी शोर मचाती बेटियों पर बिगड़कर झिड़की लगा देते थे। 6 अगस्त की सुबह वे संस्थान के भवन में काम कर रहे थे जो विस्फोट स्थल से 300 मीटर की दूरी पर था। उनकी पत्नी त्सुनेयो धमाके के तुरन्त बाद उन्हें ढूँढने निकलीं। पर पूरे शहर में आग फैलने के कारण सभी रास्ते बन्द थे। अगले दिन वे बेटी के साथ अस्थाई राहत अस्पताल भी गईं, पर वहाँ भी मासातारो नहीं मिले। बाद में उनकी लाश संस्थान के भवन में मिली। वे कुर्सी पर बैठे थे। और उनके कृत्रिम दाँत भी साथ में थे।

(ये कृत्रिम दाँत त्सुनेयो ओकाहारा द्वारा दान किए गए हैं।)

1944 का साल खत्म होने को था कि काजुए फुजिइ को सेना का बुलावा आया। "योकोहामा" के बाशिन्दे काजुए हिरोशिमा की सेना में रेलगाड़ी के द्वितीय समूह में भर्ती हो गए। उनके 6 बच्चे थे। अगले साल बसन्त में उनका परिवार भी हिरोशिमा आ गया और यहाँ उनका नया जीवन शुरू हुआ। उनकी बेटी मारिको बहुत हँसमुख थी और परिवार के सब लोगों को हमेशा खुश रखती थी। उसने "इचिरित्सु दाइइचि कोतो जोगक्को" माध्यमिक विद्यालय में दाखिला लिया। पर उससे इमारत ढहाने का काम करवाया जाता था। 6 अगस्त की सुबह भी वह काम पर थी - विस्फोट स्थल से 550 मीटर दूर। उसके पिता काजुए को इस थैली के साथ बेटी की लाश मिली। बाद में खुद काजुए भी बीमार हो गए। उनकी आँत के अन्दर खून भर गया था। विकिरण के असर से उनकी भी मौत हो गई।

(यह थैली मासाको फुजिइ द्वारा दान की गई है।)

तोशिहिको मात्सुदा "इचिरित्सु दाइइचि कोग्योगक्को" माध्यमिक विद्यालय की तीसरी कक्षा का विद्यार्थी था। पर उसे तेल के कारखाने में काम करना पड़ता था। 6 अगस्त की सुबह वह काम पर जा रहा था तभी उसने "ताकानो बाशि" ट्रॉम स्टेशन पर बहुत तेज़ चमक देखी। उसने तुरन्त ज़मीन पर लेटकर खुद को बचाने की कोशिश की पर उसके हाथ और सिर पीछे से जल गए। दो दिन तक लगातार गिरते-चलते किसी तरह वह माँ के पास पहुँचा। माँ से मिलकर उसने कहा कि सारे पुल जल गए थे, इसलिए उसे तीन नदियाँ तैरकर पार करनी पड़ीं। माँ को हौसला देते हुए उसने कहा, "मैं नहीं मरूँगा, चिन्ता मत करो"। 21 अगस्त को तोशिहिको की मौत हो गई। ये कंचे ही उसे याद रखने का एकमात्र ज़रिया रहे।

(ये कंचे युकिमी मात्सुदा द्वारा दान किए गए हैं।)

तात्सुया यामामोतो "नाकाहिरो माचि" शहर में "इचि रित्सु चूगक्को" माध्यमिक विद्यालय का विद्यार्थी था। 6 अगस्त की सुबह जब परमाणु बम गिरा, तब वह स्कूल के मैदान में था। झुलसती हालत में वह सहपाठियों के साथ अपने घर की ओर भागा। रास्ते में पड़ने वाली नदी में उतरने के बाद वह अपने सहपाठियों से बिछड़ गया। संयोग से किसी ने तात्सुया को साइकिल पर बिठाकर घर तक पहुँचा दिया। तात्सुया अपनी टोपी तो उतार सका, पर सारे कपड़े उसकी चमड़ी से चिपक गए थे। उसकी माँ को कैंची से काट-काटकर बहुत मुश्किल से उन्हें उतारना पड़ा। उसकी गर्दन और पाँव पर घाव थे। उनमें कीड़े पड़ने लगे और माँ को पिन से एक-एक कर उन कीड़ों को निकालना पड़ता था। माँ ने उसकी देखभाल बहुत मेहनत से की, पर 16 सितम्बर को वह हमेशा के लिए सो गया।

(यह टोपी मिचिया यामामोतो और आकेमि निशिजिमा द्वारा दान की गई है।)

6 अगस्त 1945 की आधी रात को 1 बजकर 45 मिनट पर यूरेनियम 235 वाला परमाणु बम लेकर बी29 नामक बमवर्षक विमान टेनियन द्वीप से रवाना हुआ। लगभग साढ़े छह घण्टे बाद परमाणु बम गिराया गया और हिरोशिमा की ज़मीन से 500 मीटर ऊपर किसी बिन्दु पर 50 किलोग्राम यूरेनियम में से सिर्फ 2 प्रतिशत के परमाणु विखण्डन की प्रक्रिया शुरू हुई। उस समय "सुमितोमो" बैंक की हिरोशिमा शाखा की प्रवेश सीढ़ियों पर कोई बैठा था। वह बेहद गरम हवा और तेज़ विकिरण से उसी पल भाप हो गया और उसकी छाया का निशान ही सीढ़ी पर रह गया। तीन दिन बाद नागासाकी में परमाणु बम गिराया गया, वहाँ की ज़मीन से 500 मीटर ऊपर के स्थान पर प्लूटोनियम 230 के परमाणु विखण्डन की प्रक्रिया शुरू हुई।

(यह पत्थर "सुमितोमो" बैंक की हिरोशिमा शाखा द्वारा दान किया गया है।)

आर्थर बिनार्ड

कवि। 1967 में अमरीका के मिशिगन में जन्म। न्यू यॉर्क की कोलगेट यूनिवर्सिटी से अँग्रेज़ी साहित्य की पढ़ाई पूरी करने के बाद वे जापान गए और उन्होंने जापानी भाषा में कविता-रचना और अनुवाद शुरू किया। कविता संग्रह "त्सुरिअगेतेवा (मछली पकड़कर)" (प्रकाशक: शिचोशा) को नाकाहारा चूया पुरस्कार, "निहोंगो बोकोरिबोकोरि (जापानी भाषा बोकोरिबोकोरि)" (प्रकाशक: शोगाकुकन) को कोदानशा एस्से पुरस्कार, "कोकोगा इए दा - बेन शान नो दाइगोफुकुल्यूमारु (यहाँ घर है - बेन शान का जहाज़ दाइगोफुकुल्यूमारु)" (प्रकाशक: शूएइशा) को निहोन एहोन पुरस्कार और "सयू नो अंजेन (बाईं-दाईं ओर की सुरक्षा)" (प्रकाशक: शूएइशा) को यामामोतो केंकिचि बुंगकु पुरस्कार मिला। उनकी सचित्र पुस्तकें हैं: "कूकिनोकाओ (हवा का चेहरा)" (प्रकाशक: फुकुईकां शोतेन) और "कोतोबामेगाने (भाषा और चश्मा)" (प्रकाशक: ओत्सुकि शोतेन)। उनकी अनूदित सचित्र पुस्तकें हैं "डैंडेलियन" और "दोन्नाकिबुन? (कैसा लगता है?)" (प्रकाशक: फुकुईकां शोतेन)। उनके अनूदित कविता संग्रह हैं: "गारागारा हेबि नो अजि (नाग का स्वाद)" (प्रकाशक: इवनामि शोतेन), "हितो नो आकाशि (इन्सान का प्रमाण)" (प्रकाशक: सेल्यूशुप्पन) आदि। उनके द्वारा श्री इवामुरा काजुओ की प्रसिद्ध रचना "14 हिकि नो सीरीज़ (14 वाले की शृंखला)" के अँग्रेज़ी अनुवाद "द फैमिली ऑफ फोरटीन" (प्रकाशक: दोशिन्शा) प्रकाशित।

ओकाकुरा तादाशि

फोटोग्राफर। 1963 में तोक्यो में जन्म। निहोन दाइगाकु (जापान विश्वविद्यालय) के कला विभाग से स्नातक। विद्यार्थी जीवन में ही गुरु मिकि जून से मुलाकात। आजकल सम्पादकीय कार्य में संलग्न। कैमरे के लेंस द्वारा वास्तविकता का स्पर्श करने से उन्हें अनन्य सुख का अनुभव होता है। उनके छायाचित्रों की प्रदर्शनी है: "कोउंल्यूसुइ (बादल की गति और जल का प्रवाह)" (1987, गिंजा निकोन सलोन) और "जिदाइयूगि (युग का खेल)" (2000, गिंजा निकोन सलोन)। उनकी अन्य किताबें हैं: "वासुरेएनु इचिदाइ नो कुरुमा यूरोप-3" (यूरोप-3 न भुला सकने वाली एक गाड़ी) (प्रकाशक: आबन नव), "शशिन तो ज़ुमेन दे तानोशिमु तेत्सुदोमोके (छाया चित्र और ड्रॉइंग के माध्यम से रेलगाड़ी का मॉडल देखें)" (प्रकाशक: निगेंशा), "जापानीज़ व्हिस्की" (प्रकाशक: शिचोशा) आदि।

आखिरी बात...

मैंने "पिकादोन*" से बहुत सारी बातें सीखीं।

मेरा जन्म अमरीका में हुआ और वहीं बड़ा हुआ। मेरी शिक्षा अमरीका के एक स्कूल में हुई और अँग्रेज़ी भाषा में मुझे यह बार-बार बताया गया कि युद्ध में परमाणु बम का गिरना ज़रूरी था और उचित भी। उस समय मुझे "पिकादोन" शब्द नहीं मालूम था। मैं एटॉमिक बॉम यानी "परमाणु बम" और न्यूक्लीयर वेपन यानी "नाभिकीय हथियार" जैसे शब्दों का प्रयोग करता था। कॉलेज की पढ़ाई पूरी होने के बाद मैं जापान आया और जापानी भाषा में पढ़ाई की। कुछ साल बाद जब मैं पहली बार हिरोशिमा गया, तब शान्ति स्मारक संग्रहालय में परमाणु बम से प्रभावित हुए लोगों की बातें सुनीं और वहीं "पिकादोन" से मेरी मुलाकात हुई। जिन लोगों ने परमाणु के वैज्ञानिक विकास में योगदान दिया, उन्होंने ही "परमाणु बम" और "नाभिकीय हथियार" के नाम का भी आविष्कार किया।

दूसरी ओर, "पिकादोन" शब्द का जन्म आम नागरिकों के बीच हुआ, जिसमें भाषा की सजीव संवेदना के साथ परमाणु विखण्डन की ठोस अभिव्यक्ति हुई। उसी शब्दरूपी लेंस ने मुझे नई दृष्टि प्रदान की। तभी मुझे यह पता चला कि "पिकादोन" के लिए अँग्रेज़ी में कोई उचित शब्द नहीं है और यह मेरे लिए बड़ी चुनौती बन गई।

उसके बाद मैं कई बार हिरोशिमा गया, शहर में काफी घूमा। वहाँ मिले लोगों के साथ बातें कीं और संग्रहालय में बार-बार जाकर प्रदर्शित वस्तुओं को देखा। कभी-कभी मुझे उन निर्वाक "वस्तुओं" की आवाज़ सुनाई दी और उन वस्तुओं के मालिकों का जीवन भी दिखाई दिया। मेरे मन में ऐसा विचार आने लगा कि अगर मैं उनकी आवाज़ की ओर ध्यान दूँ तो कभी मैं उनका दुभाषिया बन पाऊँगा।

"वस्तुओं" को कई तरह की मदद की ज़रूरत थी ताकि वे कहानीकार की भूमिका निभा सकें और पाठकों के लिए सुगम भाषा का प्रयोग कर सकें। तादाशि ओकाकुरा ने ऐसे फोटो खींचे जिनमें प्रत्येक वस्तु के जीवन और समृद्ध चेहरे की झलक है।

लेकिन उससे पहले कहानीकारों के लिए मंच तैयार करना ज़रूरी था।

मैं सम्पादिका की रित्सुको नागामुता के साथ मंच ढूँढने निकला। आखिरकार पत्थर के शिल्पी ल्यू क्योमें से मुलाकात हुई और तभी मेरा विश्वास बना कि हिरोशिमा के पत्थर के सिवाय ऐसा कोई पत्थर नहीं है जो इन कहानीकारों की कहानियों को आधार दे सकता है। क्योमें जी कुराहाशि टापू से "गिइनसेकि" नामक सुन्दर ग्रेनाइट लेकर आए और उन्होंने उन वस्तुओं को रखने के लिए एक 'चौकी' बनाई। इस "गिइनसेकि" ग्रेनाइट का प्रयोग जापान के संसद भवन में भी किया गया है।

हिरोशिमा के शान्ति स्मारक संग्रहालय के भूमिगत गोदाम में जो 21 हज़ार वस्तुएँ सुरक्षित रखी हुई हैं, उनमें से मैंने 14 वस्तुएँ चुनीं जो इस किताब में प्रस्तुत हैं।

मैंने इन कहानीकारों से भी बहुत सारी बातें सीखीं, उनको भी धन्यवाद कहना चाहता हूँ।

आर्थर बिनार्ड

* "पिकादोन" परमाणु बम का दूसरा नाम है। यह दो शब्दों के मेल से बना है — 'पिका' यानी तेज़ चमक और 'दोन' यानी धड़ाम की आवाज़।

मैं ढूँढ रहा हूँ

MAIN DHOONDH RAHA HOON

आर्थर बिनार्ड

छायाचित्रः तादाशि ओकाकुरा

जापानी से अनुवादः तोमोको किकुचि

मूल जापानी किताबः सागाशितेइमासू (SAGASHITEIMASU)
सहयोगः मारि शिमोमुरा (हिरोशिमा शान्ति स्मारक संग्रहालय) ल्यू क्योमें (तेरागाउचि सेकिजाईतें)
डिज़ाइनः ल्योइचि शिराइशि, अज़ुसा साकामोतो

Sagashiteimasu
Text Copyright © 2012 by Arthur Binard
Photographs Copyright © 2012 by Tadashi Okakura
First published in Japan in 2012 by DOSHINSHA Publishing Co., Ltd., Tokyo
Hindi translation rights arranged with DOSHINSHA Publishing Co., Ltd.
through Japan Foreign-Rights Centre

संस्करणः अगस्त 2016/2000 प्रतियाँ
कागज़ः 100 gsm मेपलिथो और 300 gsm पेपर बोर्ड (कवर)

JAPANFOUNDATION 'जापान फाउंडेशन' के वित्तीय सहयोग से विकसित

ISBN: 978-93-85236-12-9
मूल्यः ₹ 100.00

प्रकाशकः **एकलव्य**
ई-10, शंकर नगर बीडीए कॉलोनी,
शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016 (मप्र)
फोनः +91 755 255 0976, 267 1017
www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रकः आदर्श प्रा लि, भोपाल, फोनः +91 755 255 5442

इस किताब में उपयोग किया गया 100 gsm कागज़ नवीकरणीय बागानों से प्राप्त लकड़ी से बना है।

एकलव्य

JAPANFOUNDATION

द जापान फाउंडेशन
के वित्तीय सहयोग से विकसित

मूल्य: ₹ 100.00

9 789385 236129